

कोवडि-19: टीकाकरण की स्थिति

यह एडिटरियल दिनांक 21/04/2021 को द हट्टि में प्रकाशित लेख "Managing an upheaval: On universal vaccination" पर आधारित है। इसमें कोवडि-19 के टीके की त्वरित उपलब्धता से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई है।

आठ महीने पूर्व जब भारत में कोवडि-19 से संक्रमित मरीजों की औसत दैनिक संख्या में गिरावट होनी शुरू हुई तो विशेषज्ञों का मानना था कि भारत में कोवडि-19 की दूसरी लहर नहीं दिखाई देगी। जबकि, कोवडि की दूसरी लहर ने यहाँ की स्वास्थ्य संबंधी आधारभूत संरचना की सभी कमियों को उजागर कर दिया है।

इसके अलावा भारत में [कोवडि-19 संक्रमण के वसितार को रोकना कठिन हो रहा](#) है क्योंकि यहाँ पुनः लॉकडाउन लगाना देश को आर्थिक रूप से संवेदनशील स्थिति में पहुँचा सकता है। लोगों में कोवडि के प्रति डर, सार्वजनिक दवाब एवं इस संक्रमण की भयावहता को देखते हुए केंद्र सरकार ने 18 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों को टीकाकरण के लिए पंजीकृत कराने हेतु अधिकृत किया है। साथ ही, राज्यों को खरीद पर अधिक नियंत्रण करने के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश की है।

हालाँकि ये कुछ सकारात्मक कदम हैं, इसके बावजूद इस बात की संभावना कम है कि इन उपायों से टीके के सार्वभौमिकरण में या यहाँ तक कि टीके की उपलब्धता में तेज़ी आएगी।

टीके की त्वरित उपलब्धता से जुड़े कई मुद्दे निम्नलिखित हैं:

- **टीके की कमी:** यद्यपि तीन मिलियन प्रतिदिन की दर से टीकों का वितरण किया जाए तब भी भारत के प्रत्येक व्यक्ति को टीके की कम-से-कम एक खुराक मिलने में 260 दिनों का समय लगेगा।
 - टीकों की कमी के कारण भारत [टीकाकरण हेतु एक सार्वभौमिक नीति](#) नहीं बना सकता। इसे अधिक लक्ष्य केंद्रित बनाने की आवश्यकता है।
- **वित्त की कमी:** भारत में राज्यों के लिए इसकी संभावना कम है कि वो नीतिगत रूप से टीकों की आपूर्ति, खरीद एवं स्टॉक हेतु वित्त की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित कर पाएँगे।
- **कच्चे माल की कमी:** टीकों के निर्माण हेतु संयुक्त राज्य अमेरिका से आवश्यक कच्चे माल, बैग, शीशियों, सेल कल्चर मीडिया, एकल-उपयोग ट्यूबिंग, विशेष रसायनों, इत्यादि की आपूर्ति में रुकावट के कारण भी टीकों की उपलब्धता बाधित कर रही है। ज्ञातव्य है कि अब इन कच्चे माल को दूसरे देशों में निर्यात के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया है।
- **वैश्विक प्रतिबन्धताएँ:** एक अन्य मुद्दा अंतरराष्ट्रीय दायित्वों से संबंधित है। वैश्विक गठबंधन कार्यक्रम कोवैक्स ने अब तक 84 देशों में 38 मिलियन खुराक वितरित किया है, जिसमें 28 मिलियन भारत द्वारा प्रदत्त है।
 - इसके अलावा, [वैक्सीन कूटनीति पहल](#) के तहत भारत ने 60 मिलियन खुराक वितरित किया है, जिसमें आधा वाणज्यिक शर्तों पर एवं 10 मिलियन का निर्यात अनुदान के रूप में दिया गया। भारत को अपने अंतरराष्ट्रीय दायित्व का पालन करना पड़ सकता है क्योंकि जिन्हें टीके की पहली खुराक दी उन्हें दूसरी खुराक की आवश्यकता होगी।

आगे की राह

- **मल्टीमीडिया अभियान की सहायता से जागरूकता:** यदि पुनः लॉकडाउन से बचना है तो मल्टीमीडिया अभियान की सहायता से आम जनता को बड़े पैमाने पर कोवडि-19 से जुड़ी सूचनाएँ देने, शक्ति करने एवं मास्क का उपयोग करने के लिए जागरूक करना होगा, जैसा कि पोलियो एवं एचआईवी के बारे में सूचना देने के लिए किया जाता रहा है।
- **घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करना:** घरेलू स्तर पर टीकों के निर्माण से जुड़े मुद्दे, जैसे- वित्त की समस्या, प्रोजेक्ट को त्वरित सहमति इत्यादि, को समझकर उसका तीव्र गति से निराकरण सरकार की प्राथमिकता सूची में होनी चाहिये।
 - आगे जैसे-जैसे आपूर्ति व्यवस्था बेहतर होगी जैसे-वैसे कार्यान्वयन के नरिण्यों को बेहतर बनाने तथा दक्षता हासिल करने के लिए टीकाकरण की व्यवस्था को वकेंद्रीकृत किया जाना चाहिये एवं कम-से-कम पाँच महीने का स्टॉक रखकर ही निर्यात किया जाना चाहिये। इसके अलावा, टीका अपव्यय को कम करने की आवश्यकता है।
- **टीका आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना:** इलेक्ट्रॉनिक वैक्सीन इंटेल्जिंस नेटवर्क (ईवीआईएन) प्रणाली को मजबूत बनाने से देश के सभी कोलड

चेन पॉइंट्स पर वैक्सीन स्टॉक एवं स्टोरेज तापमान की जानकारी वास्तविक समय में मलिंगी ।

नष्कष

भारत का कोवडि-19 वैक्सीन अभयान एक ऐतहासक अभयान है । इसमें न केवल भारत का अपनी आबादी का टीकाकरण शामिल है बलक, वश्व के बडे टीका उत्पादकों में से एक होना भी शामिल है । टीकों के वकिस और वतरण से जुडे मुद्दों को संबोधत करते हुए कम-से-कम समय में बडी आबादी तक कुशलतापूर्वक टीकों की पहुँच सुनश्चित करनी चाहयि ।

अभ्यास प्रश्न: भारत में कोवडि-19 टीके की सरवभौमकरण के समक्ष आने वाली चुनौतयिों पर चर्चा कीजयि ।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/covid-19-vaccination>

